(करबद्ध प्रार्थना कृपया पत्रिका को पैरों में न रखें)

श्री गिरिराज ज्योति

प्राचीन भारतीय संस्कृति, ज्योतिष विज्ञान की धार्मिक, पारिवारिक, त्रैमासिक पत्रिका

15 tuojh 2022 l 14 vily 2022 rd

सत्यमेव जयते

श्री गिरिराज ज्योति पत्रिका

ब्रज गौरव, प्रतिभा सम्मान 2000 से सम्मानित

प्रातः स्मरणीय श्रीसद्गुरूदेवों का अविस्मरणीय मिलन

आर्शीवादः– श्री सद्गुरूदेव पं0 भँवर सिंह शर्मा 'जैमन'
(स्वतन्त्रता सैनानी / संरक्षक) एवं गोलोकवासी ब्रजसंत– गोवर्धन
प्रातः स्मरणीय पूज्यनीय श्री श्री 1008 श्री सद्गुरूदेव
पं0 श्री हरे राम बाबा– जतीपुरा
पं0 श्री बद्री नारायण जी, (कृष्णकुटी वाले)
पं0 श्री प्रिया शरण दास जी
पं0 श्री गया प्रसाद जी (बृजरज)

ब्रह्मा नन्द परम सुखंद केवल ज्ञान मूर्ति। द्वान्द्वातीतं गगन–सदृश तत्व मस्यादि लक्ष्यम्।।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वघी साक्षीभूतम्। भावा तीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरूं तं नमामि।।

अभिलाषाः ।।कामये दुःख तप्तानाम् प्राणिनामार्ति नाशनम्।।
(मेरी कामना है कि दुःखों से पीड़ित प्राणियों के कष्ट दूर कर सकूं।)
प्रातः स्मरणीय सद्गुरूदेव, श्री गिरिराज महाराज, श्री नृःसिंह भगवान की अनुकम्पा तथा आप सभी के स्नेह से संकल्प अवश्य ही पूरा होगा।

आपका विद्वत्तकृपाकांक्षी :

प्रधान संपादक

पं0 कैलाश चन्द्र मिश्रा 'आचार्य'
(श्री नृःसिंह उपासक / रमल विशेषज्ञ)
स्वर्ण पदक से अलंकृत / संपादक
सलाहकार ABI अमेरिका

गोलोकवासी/प्रेरणास्त्रोत

श्रीमती लक्ष्मी मिश्रा (अंजू)

प्रधान कार्यालय

श्री गिरिराज ज्योति पत्रिका
श्री नृःसिंह रमल ज्योतिष शोध संस्थान
मंदिर श्री नृःसिंह भगवान, चकलेश्वर रोड
गोवर्धन – 281502 (मथुरा)
Mob.- 09412226020 / 09760689730
Email-- ramal_jyotish@yahoo.co.in
navgrahvatika@gmail.com

मूल्यः–
स्व0 श्रीमती लक्ष्मी मिश्रा की स्मृति में एक प्रति निःशुल्क, 100/ वार्षिक।

श्री नरसिंह जय जय नरसिंह

जीवन के हर संकट में रमल ज्योतिष से कारण.

श्री नृःसिंह भगवान के द्वारा समाधान.

साक्षात् भक्त वत्सल श्री नृःसिंह भगवान की कृपा से स्थापित पराविज्ञान एवं रमल ज्योतिष पर हमारा शोध.

श्री लक्ष्मी नृःसिंह नवग्रह वाटिका

लोकमणि विहार, राधाकुण्ड परिक्रमा मार्ग, गोवर्धन (मथुरा)

के प्राँगढ़ में स्थापित

श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड (सम्पूर्ण ज्योतिषीय/वेदोक्त)

हमारे अनुभव के द्वारा पूर्ण विधान सहित पूजा कर आप अपने जीवन में आये हुये संकट अथवा पूर्व जन्मकृत अपराधों से मुक्ति हेतु श्री नृःसिंह भगवान की कृपा प्राप्त कर सुख एवं शान्ति का अनुभव कर सकते हैं..... जैसे :-

१- यदि आप **देवदोष-पितृदोष**, **कालसर्प दोष** से परेशान हैं तो **श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड** पर शास्त्रों में वर्णित **दीपदान** कर अपने संकट से मुक्ति प्राप्त करें।

२- यदि आप गृहदोष, परकृत बाधा, व्यापार बृद्धि, ऋण मुक्ति, नवग्रह शान्ति, शत्रु भय एवं अक्समात् आये संकट निवारण हेतु श्री नृःसिंह भगवान को शास्त्रोक्त सामिग्री अर्पित कर अपने संकट से मुक्ति प्राप्त करें।

३- यदि आप ग्रहदोष, (मंगल, शनि, राहु-केतु की दशा, अन्तर्दशा, अनेक आपत्तियों, कष्टों एवं कार्यों में आ रही बाधा, असाध्य रोगों के अवसर पर अभीष्ट फल प्राप्ति के लिये अचूक अनुभव सिद्ध श्री बटुक भैरवदेव की पूजा/पाठ/अनुष्ठान करके अपने जीवन में आये हुए संकट से मुक्ति प्राप्त करें।

४- आप घर बैठे नवग्रह वाटिका में (वीडियों द्वारा) पाठ कराकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

५- कृपया ध्यान दें:- **आपकी दृढ़ श्रद्धा, विश्वास, भक्ति एवं धैर्य ही आपको फल देगा।** हम तो **निमित्त मात्र** हैं।

रमल ज्योतिष द्वारा आप जान सकते हैं ?

भाग्य, रोजगार, विवाह, संतान, परीक्षाफल, ऋणमुक्ति, नष्टवस्तु (लाभालाभ), भागे व्यक्ति, रोग (परकृत बाधा किस कारण से), हारजीत, नौकरी, वर्षफल, अन्य सभी प्रश्नों के उत्तर एवं अक्समात् आये संकट का कारण और उसका सही समाधान आप रमल ज्योतिष के द्वारा प्राप्त कर लाभान्वित हो सकते हैं।

o"k&22 **foØeh lor 2078&79 'kkd 1943&44** vd&90

15 जनवरी 2022 से 14 अप्रैल 2022 तक

पत्रिका के अन्दर कहाँ क्या है ?

1.	आर्शीवाद, प्रार्थना, कवर सं0..	2
2.	संस्थान समाचार.......	1
3.	पत्रिका के अंदर...........	2
4.	संकट निवारणार्थ........	3
5.	श्री नृःसिंह यंत्रराज प्रयोग.....	4
6.	रमलज्ञ की दृष्टि में नववर्ष ...	5
7.	मौन से ऊर्जा की प्राप्ति....	6–8
8.	भोग क्या है और किस.....	8–10
9.	आध्यात्म का अध्ययन क्यों......	11–12
10.	मंत्र जाप में अशुद्ध आचरण.....	13
11.	अपराधियों की हस्त रेखायें.....	14
12.	दुर्भाग्य से मुक्ति पाने के....	15
13.	स्तुति, नियम, कवर सं0.......	3

lLFkku fu;e %& Jh fxfjjkt T;kfr e Nih jpukvk e çdV fd; x; fopkjk l lEiknd ,o lEiknd eMy dk lger gkuk vko';d ugh g D;kfd o y[kd d viu Hkko gA fo"k; lkfexh tufgr e ldfyr dh tkrh g] ftldk Hkh dN g] ge mld lnO vkHkkjh gA ge fdlh l dkb fookn ugh pkgr fQj Hkh dkb okn&fookn gkrk g rk mld fy; U;k; {k= doy eFkjk gh gkxkA fdlh Hkh çdkj dh dk;okgh çdk'ku frfFk l 3 ekg d vUnj dh tk ldrh g] ckn e fdlh Hkh iNrkN ij tckc gr ck/; ugh gA

çdk'ku%&

if=dk dk çdk'ku o"k e 4 ckj gkxkA

1& 15 tuojh **3& 15 tykbZ**

2& 15 vçy **4& 15 vDVcj**

l ikn d e.My

पं0 कैलाश चन्द्र मिश्रा ‘आचार्य’

^ç/kku l ikn d*

09760689730

अशोक कुमार गुप्ता **^lg l ikn d***, मथुरा– 09412281034

आकाश मिश्रा **^lg l ikn d*¼0;oLFkkid½**, गोवर्धन – 08445289000

राज कुमार शर्मा, देहली – 09810290567

डा0 नागेन्द्र झा, देहली – 09312043072

सुभाष अग्रवाल, गुड़गांव – 09868827820

संजीव अग्रवाल, गुड़गांव – 09818367505

चैतन्य कृष्ण शर्मा, गोवर्धन–09456897876

डा0 अशोक विश्वामित्र, गोवर्धन

कन्हैया लाल गोस्वामी, गोवर्धन

हरीओम शर्मा (एड.), गोवर्धन

डा0 विनोद दीक्षित, गोवर्धन

सूरज भान जैमन (आर.ए.एस.), कोटा

नरेन्द्र सिंह सिसोंदिया, मथुरा

राजेन्द्र कैशोरैया (एड.), मथुरा

ओमप्रकाश खण्डेलवाल (एड.), मथुरा

सी0 पी0 चतुर्वेदी (एड.), मथुरा

अजय कुमार शर्मा ‘संतोष’, मथुरा

सियाराम शर्मा, गोवर्धन

दीपक शर्मा, गोवर्धन

योगेश शर्मा, गोवर्धन

मोहित मिश्रा, गोवर्धन – 07417071048

धर्मेन्द्र कौशिक, मथुरा– (मीडिया प्रभारी) 09997983147

एवं श्री गिरिराज ज्योति पत्रिका परिवार....

Jh ujflag t; t; ujflag !

lo ldV fuokj.kkFk Jh ujflag e=&r= ç;kx

भगवान श्री नृःसिंह देव का प्रादुर्भाव सतयुग में अपने भक्त प्रहलाद की भक्ति और शरणागति को ही श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए बड़े ही आश्चर्यजनक रूप में खम्ब फाड़कर प्रगट हुए थे। उनके उस रौद्र रूप को देख जगजननी माँ लक्ष्मी भी डर गयीं। भगवान नरसिंह अपने भक्त की प्रार्थना पर ही शांत हुए। श्री नरहरि ने सभी भक्तों को आनन्द प्रदान किया। उन्हीं भगवान श्री नरसिंह देव के यह बीज मंत्र-तंत्र-यंत्र भक्तों के अभीष्ट की पूर्ति एवं घोर संकट में लाभ के लिए ही प्रकाशित किये जा रहे हैं। आशा है भक्तजन इनको नियम-पूर्वक करने से भगवान श्री नरसिंह देव की कृपा अवश्य ही प्राप्त होगी। जिससे आपके संकटों का निवारण हो जायेगा। भक्तजनों से विनम्र प्रार्थना है कि इस मंत्र-तंत्र का प्रयोग अपने, अपने परिवार अथवा स्वजन के कष्ट निवारण के लिए ही करें उन्हें अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी। यदि किसी का अहित सोचकर कर्म किया गया तो उन्हें सफलता नहीं मिलेगी बल्कि स्वयं उन्हें ही कष्ट प्राप्त होगा क्योंकि सत्य की हमेशा जीत होती है।

यदि आप पूरे विधि विधान से भगवान नरसिंह जी का पूजन नहीं कर सकते तो आपको चलते फिरते मानसिक रूप से जयप्रद मंत्र का जाप करना चाहिए।

श्री नरसिंह बीज मंत्र प्रयोगः-

जयप्रद मंत्र- श्री नरसिंह जय जय नरसिंह! के जाप से भी मनोरथ पूरण होते हैं।

रोग मुक्ति के लिये मंत्रः-

ॐ नृं नरसिंहाय नमः। प्रातःकाल सर्व प्रथम २५ बार उक्त मंत्र का जप करके स्वयं जल को पीता है तथा भगवान श्री नृःसिंह जी को चन्दन का लेप देने से रोग मुक्ति होती है।

संतान प्राप्ति के लिये मंत्रः-

ॐ नृं नृं नरसिंहाय नमः। शायंकाल १०८ बार उक्त मंत्र का जप करके विधान सहित भगवान श्री नृःसिंह जी को लाल गुलाब का पुष्प अर्पित किया जाये तो कृपा प्राप्त होती है।

धन लाभ एवं अन्य संकट निवारण के लिये मंत्रः- ॐ नृं नृं नृं नरसिंहाय नमः।

१. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित नागकेशर अर्पित करने से धन लाभ मिलता है।

२. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित मोर पंख चढ़ाने से कालसर्प दोष दूर होता है।

३. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित दही अर्पित करने से मुकदमों में विजय मिलती है।

४. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित बर्फीला पानी अर्पित करने से शत्रु पस्त होते हैं।

५. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित मक्की का आटा चढ़ाने से रूठा व्यक्ति मान जाता है।

६. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित लोहे की कील चढ़ाने से बुरे ग्रह टलते हैं।

७. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित चाँदी और मोती चढ़ाने से रूका धन मिलता है।

८. भगवान नरसिंह को शायंकाल में विधान सहित भगवा ध्वज चढ़ाने से रूके कार्य में प्रगति होती है।

यह सभी प्रयोग श्री नृःसिंह भगवान के मंदिर में ही करें। विशेष विधान वहाँ के सेवाधिकारी से पूछ लें अथवा हमसे सम्पर्क करें।

पं० कैलाश चन्द्र मिश्रा 'आचार्य'
(श्री नृःसिंह उपासक/रमल विशेषज्ञ)
संस्थापक श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड
मंदिर श्री नृःसिंह भगवान,
संस्थापक
श्री लक्ष्मी नृःसिंह नवग्रह वाटिका

श्री नरसिंह यंत्रराज प्रयोग

हमारा पराविज्ञान की सहायता से रमल ज्योतिष पर जनकल्याणार्थ शोध पर.....विश्व में प्रथमवार स्थापित **श्री नरसिंह यंत्रराज** पर सर्व कार्य सिद्दि एवं सर्व संकट निवारणार्थ किये जाने वाले प्रयोग :- यदि आप पूर्ण श्रद्धा, विश्वास, भक्ति एवं धैर्य के साथ इस यंत्र की पूजा करते हैं तो निश्चित ही श्री नृःसिंह भगवान की कृपा प्राप्त कर अपने संकट से मुक्त हो सकते हैं। श्री नृसिंह ऋणमुक्ति यंत्र पर अलग-अलग चीजें चढ़ाने से भक्तों को अलग-अलग फल मिलता है। श्री नृसिंह ऋणमुक्ति यंत्र के उपायों से हर तरह की समस्या दूर होगी ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास हैं। श्री नृःसिंह भगवान के मंदिर में जाकर उनकी फूल और चंदन से यंत्र की पूजा करें। इसके बाद जो भी आपकी मनोकामना हो उसके अनुसार भगवान को वैसी वस्तु अर्पित करें। जैसे.....

१. धन प्राप्ति के लिये इस यंत्र पर भंगवान नृःसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित नागकेशर अर्पित करें।

२. यदि आपकी कुंडली में कालसर्प दोष है तो इस यंत्र पर भंगवान नृःसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित मोरपंख अर्पित करें।

३. किसी कानूनी उलझन में फंसे है और कोर्ट-कचहरी में चक्कर लगाते हुए थक गए हैं तो इस यंत्र पर भगवान को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित दही अर्पित करने से मुकदमों विजय मिलती है।

४. प्रतिस्पर्धा से परेशान हैं या अन्जान शत्रुओं का डर हमेशा बना रहता है तो भगवान नृःसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित बर्फ मिला श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड का जल मिट्टी के पात्र में अर्पित करें। शत्रु परास्त होगें।

५. अगर कोई आपसे नाराज है या दूर हो गया है तो उससे रिश्ते को फिर वैसे ही बनाने के लिए इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित मक्की का आटा चढ़ाने से रूठा व्यक्ति मान जाता है।

६. अगर आप कर्ज में डूब रहे हों या आपका पैसा मार्केट में फंस गया है, उधारी वसूल नहीं हो रही है तो इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित चांदी या मोती अर्पित करने से रूका धन मिलता होता है।

७. अगर शरीर में लंबे समय से कोई बीमारी है, राहत नहीं मिल पा रही है, तो इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित चंदन का लेप अर्पित करें।

८. यदि आप क्रूर ग्रहों से पीड़ित है तो इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित लोहे की कील चढ़ाने से क्रूर ग्रहों के कोप से रक्षा होती है।

९. यदि आपका कोई कार्य रूका हुआ है तो भगवान नरसिंह को शायंकाल में विधान सहित भगवा ध्वज चढ़ाने से रुके कार्य में प्रगति होती है।

१०. यदि क्रूर ग्रहों अथवा अन्य कारणों से किसी लड़के की शादी में बाधा आ रही है तो प्रत्येक शुक्रवार को इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित सफेद वस्तु अर्पण करने से शीघ्र ही विवाह का योग वनेगा।

११. यदि क्रूर ग्रहों अथवा अन्य कारणों से किसी लड़की की शादी में बाधा आ रही है तो प्रत्येक गुरूवार को इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित पीली वस्तु अर्पण करने से शीघ्र ही विवाह का योग वनेगा।

विशेष पूजाः- १. मुकदमे में विजय और विरोधियों को शान्त करने के लिएः- प्रतिदिन इस यंत्र पर भगवान नरसिंह की शायंकाल/रात्रि में विधान सहित पंचोपचार अथवा षोड़शोपचार पूजा करें, पूजा में लाल पुष्प, एक लाल रेशमी धागा अर्पित करें, उनके सामने घी का चौमुखी दीपक जलाएं। इसके बाद विशेष मंत्र की ५ माला जप करें। शत्रु और विरोधियों के शांत होने की प्रार्थना करें तदुपरांत सेवाधिकारी से अर्पित किए हुए धागे को दाहिने हाथ की कलाई में धारण करें।

२. कर्ज मुक्ति और धन प्राप्ति के लिये:- मंगलवार को इस यंत्र पर भगवान नरसिंह की शायंकाल/रात्रि में विधान सहित पंचोपचार अथवा षोड़शोपचार पूजा करें, तत्पश्चात श्री यंत्रराज के समक्ष तीन दीपक जलाएं, साथ ही जितनी आपकी उम्र है उतने ही लाल फूल अर्पित करें तदुपरांत विशेष मन्त्र **"ऊँ ऋणमुक्तेश्वर नरसिंहाय मम् ऋण मुक्तिं शीघ्रं कुरू कुरू श्री नरसिंहाय नमः"** का जप करते हुए मसूर की दाल (साबुत) अर्पित करें।

३. आयु रक्षा और सर्वकल्याण के लिएः- गुरूवार अथवा चतुर्दशी को इस यंत्र पर भगवान नरसिंह की शायंकाल/रात्रि में विधान सहित पंचोपचार अथवा षोड़शोपचार पूजा करें, उन्हें पीली वस्तुओं का भोग लगाएं.- इसके बाद विशेष मन्त्र का कम से कम १०८ बार जाप करें। **"उग्रं वीरं महाविष्णुं, ज्वलन्तं सर्वतोमुखं। नृःसिंहं भीषणं भद्रं, मृत्युं मृत्युं नमाम्यहं।।"** ।। श्री नरसिंह जय जय नरसिंह।।

रमलज्ञ की दृष्टि में नववर्ष का संसार चक्र

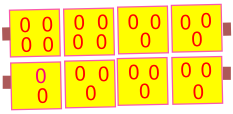

मैं सर्वप्रथम अपने माता-पिता, गुरूजन आदि देव श्री गिरिराज जी तथा इष्टदेव श्री नृःसिंह भगवान के श्री चरणों में प्रणाम कर हमारी प्रायः लुप्त हो चुकी रमल ज्योतिष के द्वारा संसार चक्र को देखने का प्रयास कर रहा हूँ, यदि इसमें कोई गलती हो जाय तो विद्वतजन मेरे अपराध को क्षमा करें।

यह वर्ष सुखदायी फल देने वाला है। इस वर्ष का स्वामी **बुध** है, काल चक्र के अनुसार इस वर्ष शुक्र, गुरू, मंगल, शनि का भी पूर्ण वर्चस्व रहेगा। यह वर्ष सुख-धन लाभ के साथ कष्टप्रद भी रहे। साथ ही मनुष्य (जीवों) को बहुत क्लेश युक्त रहे। वर्षा कहीं कम होवे तो कहीं अधिक होवे। वायु अधिक चलें, तेज चक्रवातों से जन हानि होवे। अन्नादि का भाव तेज होवे। मनुष्यों के स्वभाव उद्वेग्य से भरे रहे अर्थात् घर-घर विरोध उत्पन्न होवे। धरा पर अनेक रोगों की बृद्धि होवे। दास आदि नीचजनों से उपद्रव होवे। राजा अन्याय करें अर्थात् सदैव अपने स्वार्थ के लिए अनैतिक कार्य करेंगे। भूकम्प आवेंगे जिसका अधिक तर प्रभाव मध्य पूर्व एवं उत्तर में होवे। जगह-जगह आकाशीय बिजली का प्रकोप होवे और उससे धन हानि होगी। चोर-डाकू, दुष्टजनों का बोल-बाला होगा। जनमानस में निराशा व्याप्त होगी। राजाओं के शत्रु बढ़ेंगे। राजा आपस में अपने स्वार्थ (वर्चस्व) के वशीभूत होकर लड़ेगें। भयंकर बीमारी प्रकोप होवे। जनता को राजा एवं शत्रुओं से भय प्राप्त होवे। शत्रुओं के कारण मित्रों का आवागमन बना रहे। अकाल पड़े, अनेकों प्राकृतिक आपदाओं से युक्त रहे जैसे- रेल दुर्घटना, वायुयान, जलयान दुर्घटना, सूखा, भारी हिमपात, बाढ़ आदि-आदि।

धरा अकुलायेगी, त्राहि-त्राहि होवे। आकाश गंगा में अनेक आश्चर्यजनक घटनायें घटें। विश्व में शान्ति, सौख्य एवं भौतिक विकास से सम्बन्धित कार्यो को बल मिलेगा। विज्ञान के क्षेत्र में नई उपलब्धियाँ प्राप्त होंगी। दो देशों के मध्य युद्ध की पूरी-पूरी सम्भावनायें है। सेनायें आमने-सामने युद्ध को तैयार खड़ी रहें। सत्ता पलट होगी।

इसका प्रभाव विश्व के उत्तर एवं पश्चिम देश, तुर्किस्तान (प्राचीन नाम), बंगाल और कूर्म चक्र के और कूर्म चक्र के आग्नेय-उत्तर में होवें। समृद्ध देश, छोटे एवं शांति प्रिय देशों में अराजकता करने में खूब दिलचस्पी लेंगे। आतंकवाद को पूर्ण बल प्राप्त होगा।

भारत में गर्मी, आंधी, तूफान, बवन्डर, चक्रवात, अनावृष्टि, बाढ़, भू-स्खलन, हिमपात, रेल, वायुयान-जलयान आदि दुर्घटनाओं से धन-जन हानि होगी। देश की सीमाओं पर खतरा बराबर बना रहेगा। आतंकवाद बढ़ेगा, अत्याचार बढ़े, धरा पर प्राणीजन परेशान होवें। राजा से प्रजा पर दण्ड बढ़े। मंहगाई तीव्र गति से बढ़े। पैट्रोलियम आदि के भाव बढ़े। आवागमन गरीब प्रजा के लिए कष्टप्रद रहे। बर्षा कहीं कम कहीं अधिक होवे। अकाल पड़े। महामारी अथवा भयंकर बीमारी बढ़े। मेघों से भयंकर गर्जना होवें। चोर खुश रहें। धन नाश होवे। सरकारी कोष में धन संग्रह बढ़े। रोग बढ़े। व्यापार से, युद्ध से लाभ होवे। किसी बड़ी हस्ती का आगमन लाभप्रद रहे। राष्ट्रीय स्तर पर कोई श्रेष्ठ वार्ता सुनने में आवे। नीतिगत बातों का बोलबाला होवे। जगह-जगह विश्व शांति एवं धर्म प्रचार-प्रसार हेतु यज्ञ-हवन आदि मांगलिक कार्य होवें। लोग मानसिक शांति के लिए ईश्वर की ओर प्रेरित होकर धर्म के कार्यो में स्वार्थ रुप से संलग्न होवें। राजाओं के साथ-साथ धर्म के ठेकेदार जो (छल-कपट-दम्भ) आदि से जनता को ठगते ही रहेगें। उनका ऐश्वर्य बढ़ेगा। भारतीय संस्कृति का विश्व में तीव्रता से प्रयोग होवे, लेकिन भारत में ह्रास होवें। भारत पुनः अपने पूर्वपद (विश्वगुरू) को प्राप्त करने के लिये अग्रसर रहे। सत्ता हथियाने को आपस में होड़ रहेगी। स्त्रीयों का वर्चश्व बढ़ेगा। अचानक प्रभावी नेता का देहावसान होवे। किसी प्रदेश में भारी संकट (प्राकृतिक, दैवीय, शासकीय आपदा) विशेषकर मध्य-आग्नेय, उत्तर-पश्चिम में होवे। मध्य-पूर्व के राजाओं का वर्चश्व बढ़ें। भारत एक समृद्धशाली देश बनने के लिये बराबर प्रयत्नशील रहेगा। परमपिता परमेश्वर मेरे देशवासियों (भारत) को अपनी पूर्व संस्कृति को अपनाने की सद्बुद्धि प्रदान करें। **।। इति शुभम्।।**

जय श्री कृष्ण !

पं. कैलाश चन्द्र मिश्रा "आचार्य"
(श्री नृःसिंह उपासक, रमलाचार्य)
स्वर्ण पदक से अलंकृत
संस्थापक- श्री लक्ष्मीनृःसिंह नवग्रह वाटिका

मौन से ऊर्जा की प्राप्ति

मौन न तो अंग्रेजी होता है, न हिन्दी, न उर्दू, बल्कि यह हृदय की भाषा है। हृदय, प्रेम एवं आत्मा का निवास स्थान है, इसलिये यह प्रेम एवं आत्मा की भाषा है। इसे हमें सीखना नहीं पड़ता, यह प्रकृति एवं परमात्मा की वाणी है। अन्तरात्मा की कहानी है।

मौन का अर्थ सिर्फ वाणी, बोली या भाषा का नहीं होना या चुपचाप रहना नहीं है, बल्कि मौन का अर्थ है मन का नहीं होना। शोरगुल, वाणी का प्रभाव या आवाज का बंद हो जाना मात्र मौन नहीं है, बल्कि मौन है अस्तित्व गत हो जाना। मौन अस्तित्व की भाषा है मौन अन्तर्मन का स्वरहीन संगीत है, जो मन के विसर्जन से ही उपलब्ध होता है। मौन आत्मा का सुवास है, यह रोयें-रोयें को तृप्त कर दिग-दिगन्त तक फैलने लगती है।

बाहर का मौन अंदर के रिदम, हार्मोनी संगीत से जोड़ने में सहयोगी है। अन्तर्मन ही हमारा यानी आत्मा का स्वभाव है। मौन आत्मा की रोशनी रहित ऐसा अनन्त, आनंदमयी, अलौकिक, शाश्वत, सनातन, असीम, अपूर्व एवं नित्य नूतन आलोक है, जिसे अन्तः चक्षु से ही निखरा जा सकता है।

मौन यानी मन का विसर्जन अर्थात् मन ही नहीं रहा, मिट गया, शून्यवत हो गया, भीतर तक की भाषा, कोलाहल खत्म हो गया, फिर जो घटना घटती है, वह मौन की घटना है।

यह घटना मनुष्य के अन्तरात्मा को रूपान्तरित कर देती है। जीवन को समग्रता प्रदान करती है। इस घटना के बाद मनुष्य वह नहीं रह जाता, जो शान्त मन से पहले की स्थिति में होता है। उसके विचार, उसका चिन्तन, उसकी धरण शक्ति में एक अलग तरह की चमक आ जाती है। वह मनुष्य से मुनि बनने की क्रिया की ओर अग्रसर होने लगता है।

जब मन नहीं होता है तो अमन अर्थात् शांति का भाव होता है। मानव सही अर्थो में अपनी दिव्यता को प्राप्त कर लेता है। मन के शून्य होने से ही मनुष्य झुकना सीखता है, अन्यथा उसमें अहंकार का भाव विद्यमान हो जाता है। इसलिये हमारे ऋषि-मुनियों ने शास्त्रों में कहा कि एक साधक को सप्ताह में एक दिन मौन रहने की क्रिया भी करनी चाहिये जिससे हमारे अंदर की अशान्ति, ईर्ष्या, द्वेष, प्रतिस्पर्धा, तनाव, पीड़ा, क्रोध, हिंसा एवं दुःख इन सभी को मौन में मिटाना ही होता है। जहां मन की अशांति एवं अशुधियाँ जल जाती हैं। सोना कुन्दन बन जाता है।

तन, मन यानी सभी तलों पर बोली का मिट जाना, वाणी का मूक हो जाना यानि समस्त क्रियाओं को शून्य बना लेने की कला है मौन और जो फिर बचता है, वह है, आध्यात्मिक अर्थ में वही सही साधक, ऋषि-मुनि है।

प्रायः जब हम मौन होते हैं, तब हमारी वाणी तो मूक होती है, परन्तु हम शरीर से बोलने लगते है। लिखकर, इशारे तथा अन्य अनेक भाव-भंगिमाओं से बातचीत शुरू कर देते हैं। यह मौन नहीं है। जब शांत बैठते हैं उस समय भी हम अनेक सगे-सम्बन्धियों, मित्र-शत्रु आदि अनेक पात्रों को मन से निर्मित कर लेते हैं। प्रत्यक्ष में कोई है नहीं, परन्तु कल्पनाओं में बातचीत व चर्चायें छिड़ जाती हैं। किन्तु यह मौन नहीं होता मौन का तत्पर्य है अपने भीतर उतरने की क्रिया जिसके माध्यम से हम अपने विचारों में शुभता का भाव ला सकें।

ध्यान, स्वास्थ्य एवं समग्रता की भाषा है- मौन। बैठें, सोयें, शरीर की प्रत्येक गतिविधि के प्रति होश लायें। शरीर का हिलना-डुलना, करवटें बदलना यानि शरीर की विविध गतिविधियाँ शरीर के वाचाल होने का लक्षण है। शरीर की इस भाषा यानि हर गतिविधि के प्रति जितना होश रखेंगे, शरीर उतना ही मौन में उतेरगा, श्वास सेतु है, शरीर, मन तथा चेतना के मध्य। श्वास सेतु के सहारे अन्तरात्मा में उतरने पर पहले शरीर, फिर मन के पार मौन, जिससे हमारी आत्मा की यात्रा शुरू होती है। जिसे अपूर्व आनंद कहा जाता है, यह प्राणों का अनहद नाद, अजपा जप की मधुर ध्वनि होती है जिसे मात्र अनुभव किया जा सकता है, उस संगीत की मादकता जिसकी अनुभूति मौन

साधक ही कर सकते है।

जब हम मौन धारण करते हैं, तो एक अपूर्व आनंद की प्राप्ति होती है, जिससे हमारे शरीर में एक नवीन ऊर्जा का आणविक विस्फोट होता है, काफी मात्रा में ऊर्जा संचित व संग्रहित होती है। इसी ऊर्जा का उपयोग हमारे वैदिक ऋषि-मुनि वरदान व शाप के रूप में करते आये है।

इसलिये शास्त्रों में मौन को सर्व श्रेष्ठ माना है। क्योंकि मौन के माध्यम से हमें जो शक्ति प्राप्त होती है। वह अपने आप में ही अद्वितीय होती है, जिसके माध्यम से हमारे भीतर भी शाप आदि देने की क्षमता आ जाती है ? दृष्टि, आकाश, स्वास्थ्य, उपासना, मौन एक-दूसरे के पर्याय हैं। जैसे कि छुट्टी का अर्थ भली-भाँति न समझ पाने के कारण उस दिन सर्वाधिक तनाव, बोझ तथा कचरे से तन तथा मन को भर लेते हैं। अवकाश के दिन इस भाग-दौड़ भरी जिन्दगी की समस्त क्रियाओं से अपने आपको कुछ मुक्त करने का प्रयास करें। स्वयं की अन्तर आत्मा को भी कुछ समय दे, यह फिर दैनिक कार्य में से कुछ समय स्वयं के लिये निकाल कर अपने ईष्ट व गुरू के चित्र के सामने कुछ क्षण मौन धरण कर उनके चित्र की ओर देखने का प्रयास करें। कुछ दिन के प्रयास के बाद आपको आभास होगा कि एक नई शक्ति, चेतना आपके भीतर में प्रवेश करने लगी है।

आप अनुभव करने लगेंगे कि सही अर्थों में आपके जीवन में कुछ परिवर्तन आने लगा है, अगर आप निरन्तर प्रयास करेंगे तो जरूर कुछ नया अपके जीवन में गठित होगा ही, मौन में बहुत शक्ति होती है आप चाहें कितना ही मंत्र जप, योग, हवन, आदि की क्रिया कर लें पर जब तक कुछ क्षण का मौन नहीं धारण करेंगे तब तक आपको कुछ अनुभव नहीं होगा, और ज्यादातर साधक यही क्रिया नहीं करते हैं।

वे मंत्र जप तो करते हैं, पर वह ज्यों ही मंत्र जप समाप्त होता है, कुछ ना कुछ क्रियाओं में लग जाते हैं, जिससे क्या होता है कि हमने जितना भी मंत्र, जप, पूजा, पाठ किया होता है, वह सब हमारी व्यर्थ बातों में नष्ट हो जाता है। इसलिये हमारे ऋषियों ने कहा है-

मंत्रस्य पूजनत् एकाग्रता स ध्यानं।
मौन धारणेन लभ्यते शक्तिं वृद्धिस्तथैव च।।

अर्थ- जब भी आप मंत्र जप, पूजा आदि करें एकाग्र मन से करें, किसी भी साधना पूजा से पहले मौन धारण कर लें और किसी से कोई बात न करें और जब पूजा, साधना समाप्त हो तो कुछ देर मौन ही रह कर अपने ईष्ट व गुरू के चित्र की ओर शांति पूर्वक देख आप इस तरह की क्रिया अगर साधना के समय करें तो जरूर अनुभव करेंगे कि आपके शरीर में ऊर्जा की वृद्धि हो रही है। इसीलिये तो नौकरी में रविवार का अवकाश दिया जाता है। जिससे आप उस दिन मौन रह कर अपने शरीर को ऊर्जा से युक्त कर सकें, अवकाश का भावार्थ ही अंग्रेजी में होली-डे कहा गया है, यानि पवित्रतम दिन, यानि स्वास्थ्य दिवस अर्थात् स्वयं में स्थित होने का दिवस।

मौन का स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिक पक्ष सबल एवं सामर्थ्यवान तो है ही, बल्कि पारिवारिक सामाजिक, राजनैतिक, पर्यावरणीय, सौन्दर्य एवं नैतिक सम्बन्धों में संतुलन रखकर सभी प्रकार के समाधान करने में भी मौन सर्वाधिक सक्षम है।

महात्मा गांधी जी का अमोघ अहिंसात्मक अस्त्र मौन तथा उपवास था, जिसके बल पर राष्ट्र स्वतन्त्र हुआ। हमारी धर्मिक जीवन शैली ही मौन है। मौन होने से मन की दुविधा समाप्त हो जाती है, सभी इन्द्रियों तथा वृत्तियों की उद्दण्डता नष्ट हो जाती है, आत्मा का शासन होता है, आत्मा के कहे अनुसार इन्द्रियाँ तथा वृत्तियाँ संचालित होती हैं। आत्म-अनुशासन की साधना ही मौन है।

मौन के द्वारा सृजनात्मक ऊर्जा बढ़ाने के साथ ही मौन साधना में सफलता का साधन है-

१. जहाँ जब सम्भव हो, मौन रहें।
२. उतना ही बोले, जितना आवश्यक हो।
३. सुबह-शाम एक निश्चित समय निर्धरित करें, और उस समय मौन धरण करें।
४. अब तक आपने बहुत शोरगुल किया है, बड़ी-बड़ी बातें की हैं, बहुत बोले हैं, अब अबोल

होकर देखें, अनमोल हो जायेंगे।

५. कभी पेड़, फूल, पौधे, झरने, नदी, समुद्र या झील के किनार बैठकर उनकी आवाज, उनका संगीत सुनें। मात्र सुनें, कोई प्रतिक्रिया न करें, मौन का स्वर रहित संगीत सुनने में आप सक्षम हो सकेंगे।

६. किसी फूल के पौधे के पास बैठ जायें, उसे मात्र देखें, अच्छा या बुरा विश्लेषण नहीं करें, मात्र निहारें, सत्य के अर्न्तगत में, जहाँ असीम मौन का आनंदमय साम्राज्य है, वहां प्रवेश कर जायेंगे। जैसे उसे उसी स्वरूप में बिना किसी चुनाव के अवलोकन मात्र से मौन घटता है।

सत्य को कहा नहीं जा सकता है। सत्य को लिखा नहीं जा सकता है, सत्य को मात्र अनुभव एवं एहसास किया जा सकता है, हमारी अन्तरात्मा का स्वभाव है मौन, जो अन्तह में है। मौन बाहर तथा अन्दर के अतीत एवं भविष्य के विचारों के कोलाहल की भीड़ में सो गया है। उपर्युक्त प्रयोग द्वारा रोगमुक्ति एवं स्वास्थ्य के प्रति अमोघ अस्त्र है मौन।

मौन एक आंतरिक यात्रा है। इस यात्रा में कोई संगी-साथी, सम्बन्धी नहीं है। अकेले ही यह लम्बी यात्रा तय करनी पड़ती है। अकेले होने का भय मौन की यात्रा में बाधक बन जाता है। जब तक हम किसी का साथ नहीं हो सकता है। मौन परमात्मा के साथ होने की यात्रा है।

मौन में शरीर तथा मन की वाणी खो जाती है, हम शून्य हो जाते हैं, नितांत स्वयं के साथ मन का भी विसर्जन हो जाता है, तभी ध्यान एवं समाधि के सुमन खिलते हैं, जिससे जीवन में प्रेम माधुर्य रस की प्राप्ति संभव हो पाती है।

कृपया ध्यान दें:- आपकी श्रद्धा, आपका विश्वास आपको फल देगा। हम तो निमित्त मात्र हैं।

youtube. kailashmishra, govardhan

आपका संकट निवारण एवं संतुष्टि ही हमारा लक्ष्य !

भोग क्या हैं, और किस भगवान को चढ़ाएं कौन-सा प्रसाद ?

प्रसाद भगवान के प्रति एक भाव है आइए जानें कौन से भगवान को हम क्या प्रसाद चढाएं कि हमें पुण्य प्राप्त हो ? पूजा-पाठ या आरती के बाद तुलसीकृत जलामृत व पंचामृत के बाद बांटे जाने वाले पदार्थ को **"प्रसाद"** कहते हैं। पूजा के समय जब कोई खाद्य सामग्री देवी-देवताओं के समक्ष प्रस्तुत की जाती है तो वह सामग्री प्रसाद के रूप में वितरण होती है। इसे **"नैवेद्य"** भी कहते हैं।

पत्रं, पुष्पं, फलं, तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।

अर्थ:- जो कोई भक्त मेरे लिए प्रेम से पत्र, पुष्प, फल, जल आदि अर्पण करता है, उस शुद्ध बुद्धि निष्काम प्रेमी का प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ वह पत्र-पुष्पादि मैं सगुण रूप में प्रकट होकर प्रीति सहित खाता हूं। - **श्रीकृष्ण**

हिन्दू धर्म में मंदिर में या किसी देवी या देवता की मूर्ति के समक्ष प्रसाद चढ़ाने की प्राचीनकाल से ही परंपरा रही है। यह बहुत महत्वपूर्ण सवाल है कि किस देवता को चढ़ता है कौन-सा प्रसाद। यह जानना जरूरी है कि किस देवता को चढ़ता है किस चीज का प्रसाद जिससे कि वे प्रसन्न होंगे।

यज्ञ की आहुति भी देवता का प्रसाद है ! प्रसाद चढ़ावे को नैवेद्य, आहुति और हव्य से जोड़कर देखा जाता रहा है, लेकिन प्रसाद को प्राचीनकाल से ही **"नैवेद्य"** कहते हैं, जो कि शुद्ध और सात्विक अर्पण होता है। इसका संबंध किसी बलि आदि से नहीं होता। हवन की अग्नि को अर्पित किए गए भोजन को **"हव्य"** कहते हैं। यज्ञ को अर्पित किए गए भोजन को **"आहुति"** कहा जाता है। दोनों का अर्थ एक ही होता है। हवन किसी देवी-देवता के लिए और यज्ञ किसी खास मकसद के लिए।

प्राचीनकाल से ही प्रत्येक हिन्दू भोजन करते वक्त उसका कुछ हिस्सा देवी-देवताओं को समर्पित करते आया है। यज्ञ के अलावा वह घर-

परिवार में भोजन का एक हिस्सा अग्नि को समर्पित करता था। अग्नि उस हिस्से को देवताओं तक पहुंचा देती थी। चढ़ाए जाने के उपरांत नैवेद्य द्रव्य **"निर्माल्य"** कहलाता है।

यज्ञ, हवन, पूजा और अन्न ग्रहण करने से पहले भगवान को नैवेद्य एवं भोग अर्पण की शुरुआत वैदिक काल से ही रही है। **'शतपत ब्राह्मण'** ग्रंथ में यज्ञ को साक्षात् भगवान का स्वरूप कहा गया है। यज्ञ में यजमान सर्वश्रेष्ठ वस्तुएं हवि रूप से अर्पण कर देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहता है।

शास्त्रों में विधान है कि यज्ञ भोजन पहले दूसरों को खिलाकर यजमान ग्रहण करेंगे। वेदों के अनुसार यज्ञ में हविष्यान्न और नैवेद्य समर्पित करने से व्यक्ति देवऋण से मुक्त होता है। प्राचीन समय में यह नैवेद्य (भोग) अग्नि में आहुति रूप में ही दिया जाता था, लेकिन अब इसका स्वरूप थोड़ा-सा बदल गया है।

गुड़-चने के प्रसाद का प्रचलन ऐसे हुआ शुरूः- देवर्षि नारद भगवान विष्णु से आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना चाहते थे लेकिन जब भी वे विष्णुजी के पास जाते तो विष्णुजी कहते कि पहले उन्हें इस ज्ञान के योग्य बनना होगा। तब नारदजी ने कठोर तप किया लेकिन फिर भी बात नहीं बनी तब वे चल पड़े धरती की ओर। धरती पर उन्होंने एक मंदिर में साक्षात् विष्णु को बैठे हुए देखा कि एक बूढ़ी महिला उन्हें अपने हाथों से कुछ खिला रही है। नारदजी ने विष्णुजी के जाने के बाद उस बूढ़ी महिला से पूछा कि उन्होंने नारायण को क्या खिलाया? तब उन्हें पता चला कि गुड़-चने का प्रसाद उन्होंने ग्रहण किया था। कहते हैं कि नारद तब वहां रुककर तप और व्रत करने लगे और गुड़-चने का प्रसाद सभी को बांटने लगे।

एक दिन नारायण स्वयं प्रकट हुए और उन्होंने नारद से कहा कि सच्ची भक्ति वाला ही ज्ञान का अधिकारी होता है। भगवान विष्णु ने उस बूढ़ी महिला को वैकुंठ धाम जाने का आशीर्वाद दिया और कहा कि जब भी कोई भक्त गुड़ और चना अर्पित करेगा उसकी मनोकामना निश्चित ही पूरी होगी। माना जाता है कि तभी से सभी ऋषि, मुनि और भक्त अपने इष्ट को गुड़ और चने का प्रसाद चढ़ाकर प्रसन्न करते आ रहे हैं।

प्रचलित प्रसादः- गुड़-चना, चना-मिश्री, नारियल-मिठाई, लड्डू, फल, दूध और सूखे मेवे।

विष्णु भोगः- विष्णुजी को खीर या सूजी के हलवे का नैवेद्य बहुत पसंद है। खीर कई प्रकार से बनाई जाती है। खीर में किशमिश, बारीक कतरे हुए बादाम, बहुत थोड़ी-सी नारियल की कतरन, काजू, पिस्ता, चिरौंजी, थोड़े से पिसे हुए मखाने, सुगंध के लिए एक इलायची, कुछ केसर और अंत में तुलसी जरूर डालें। उसे उत्तम प्रकार से बनाएं और फिर विष्णुजी को भोग लगाने के बाद वितरित करें।

भारतीय समाज में हलवे का बहुत महत्व है। कई तरह के हलवे बनते हैं लेकिन सूजी का हलवा विष्णुजी को बहुत प्रिय है। सूजी के हलवे में भी लगभग सभी तरह के सूखे मेवे मिलाकर उसे भी उत्तम प्रकार से बनाएं और भगवान को भोग लगाएं।

प्रति रविवार और गुरुवार को विष्णु-लक्ष्मी मंदिर में जाकर विष्णुजी को उक्त उत्तम प्रकार का भोग लगाने से दोनों प्रसन्न होते हैं और उसके घर में किसी भी प्रकार से धन और समृद्धि की कमी नहीं होती है।

शिव भोगः- शिव को भांग और पंचामृत का नैवेद्य पसंद है। भोले को दूध, दही, शहद, शक्कर, घी, जलधारा से स्नान कराकर भांग-धतूरा, गंध, चंदन, फूल, रोली, वस्त्र अर्पित किए जाते हैं। शिवजी को रेवड़ी, चिरौंजी और मिश्री भी अर्पित की जाती है।

श्रावण मास में शिवजी का उपवास रखकर उनको गुड़, चना और चिरौंजी के अलावा दूध अर्पित करने से सभी तरह की मनोकामना पूर्ण होती है।

हनुमान भोगः- हनुमानजी को हलुआ, पंच मेवा, गुड़ से बने लड्डू या रोट, डंठल वाला पान और केसर-भात बहुत पसंद हैं। इसके अलावा हनुमानजी को कुछ लोग इमरती भी अर्पित करते हैं।

कोई व्यक्ति ५ मंगलवार हनुमानजी को

चोला चढ़ाकर यह नैवेद्य लगाता है, तो उसके हर तरह के संकटों का अविलंब समाधान होता है।

लक्ष्मी भोगः- लक्ष्मी जी को धन की देवी माना गया है। कहते हैं कि अर्थ बिना सब व्यर्थ है। लक्ष्मीजी को प्रसन्न करने के लिए उनके प्रिय भोग को लक्ष्मी मंदिर में जाकर अर्पित करना चाहिए।

लक्ष्मीजी को सफेद और पीले रंग के मिष्ठान, केसर-भात बहुत पसंद हैं। कम से कम ११ शुक्रवार को जो कोई भी व्यक्ति एक लाल फूल अर्पित कर लक्ष्मीजी के मंदिर में उन्हें यह भोग लगाता है तो उसके घर में हर तरह की शांति और समृद्धि रहती है। किसी भी प्रकार से धन की कमी नहीं रहती।

दुर्गा भोगः- माता दुर्गा को शक्ति की देवी माना गया है। दुर्गाजी को खीर, मालपुए, मीठा हलुआ, पूरी, केले, नारियल और मिष्ठान बहुत पसंद हैं। नवरात्रि के मौके पर उन्हें प्रतिदिन इसका भोग लगाने से हर तरह की मनोकामना पूर्ण होती है, खासकर माताजी को सभी तरह का हलुआ बहुत पसंद है। बुधवार और शुक्रवार के दिन दुर्गा मां को विशेषकर नेवैद्य अर्पित किया जाता है। माताजी के प्रसन्न होने पर वह सभी तरह के संकट को दूर कर व्यक्ति को संतान और धन सुख देती है। यदि आप माता के भक्त हैं तो बुधवार और शुक्रवार को पवित्र रहकर माताजी के मंदिर जाएं और उन्हें ये भोग अर्पित करें।

सरस्वती भोगः- माता सरस्वती को ज्ञान की देवी माना गया है। ज्ञान कई तरह का होता है। स्मृतिदोष है तो ज्ञान किसी काम का नहीं। ज्ञान को व्यक्त करने की क्षमता नहीं है, तब भी ज्ञान किसी काम का नहीं। ज्ञान और योग्यता के बगैर जीवन में उन्नति संभव नहीं। अतः माता सरस्वती के प्रति श्रद्धा होना जरूरी है। माता सरस्वती को दूध, पंचामृत, दही, मक्खन, सफेद तिल के लड्डू तथा धान का लावा पसंद है। सरस्वती जी को यह किसी मंदिर में जाकर अर्पित करना चाहिए, तो ही ज्ञान और योग्यता का विकास होगा।

गणेश भोगः- गणेशजी को मोदक या लड्डू का नैवेद्य अच्छा लगता है। मोदक भी कई तरह के बनते हैं। महाराष्ट्र में खासतौर पर गणेश पूजा के अवसर पर घर-घर में तरह-तरह के मोदक बनाए जाते है। मोदक के अलावा गणेशजी को मोतीचूर के लड्डू भी पसंद हैं। शुद्ध घी से बने बेसन के लड्डू भी पसंद हैं। इसके अलावा आप उन्हें बूंदी के लड्डू भी अर्पित कर सकते हैं। नारियल, तिल और सूजी के लड्डू भी उनको अर्पित किए जाते हैं।

राम भोगः- भगवान श्रीरामजी को केसर भात, खीर, धनिए का भोग आदि पसंद हैं। इसके अलावा उनको कलाकंद, बर्फी, गुलाब जामुन का भोग भी प्रिय है।

श्रीकृष्ण भोगः- भगवान श्रीकृष्ण को माखन और मिश्री का नैवेद्य बहुत पसंद है। इसके अलावा खीर, हलुआ, पूरी, लड्डू और सिवइयां भी उनको पसंद हैं।

श्री नरसिंह भोगः- भगवान श्री नरसिंह जी को जौ का हलवा, मौनथार एवं रोट बति प्रिय हैं।

कालिका और भैरव भोगः- माता कालिका और भगवान भैरवनाथ को लगभग एक जैसा ही भोग लगता है। हलुआ, पूरी और मदिरा उनके प्रिय भोग हैं। किसी अमावस्या के दिन काली या भैरव मंदिर में जाकर उनकी प्रिय वस्तुएं अर्पित करें। इसके अलावा इमरती, जलेबी और ५ तरह की मिठाइयां भी अर्पित की जाती हैं। भैरव जी को रोट भी अर्पण किया जाता है

१० महाविद्याओं में माता कालिका का प्रथम स्थान है। गूगल से धूप दीप देकर, नीले फूल चढ़ाकर काली माता को काली चुनरी अर्पित करें और फिर काजल, उड़द, नारियल और पांच फल चढ़ाएं। कुछ लोग उनके समक्ष मदिरा अर्पित करते हैं। इसी तरह कालभैरव के मंदिर में मदिरा अर्पित की जाती है।

जीवन के हर संकट में
रमल ज्योतिष से कारण.
श्री नृःसिंह भगवान
के द्वारा समाधान.

www.navgrahvatika.com

अध्यात्म का अध्ययन कैसे करना चाहिए

१. अध्यात्म के अध्ययन का महत्व:- हमें क्यों करनी चाहिए, यह समझने के लिए अध्यात्म शास्त्र का अध्ययन करना आवश्यक है। जब हमारी बुद्धि साधना का महत्त्व समझ लेती है, तब हम नियमित साधना करने के समर्पित प्रयास कर सकते हैं। अध्यात्म के सिद्धांतों को समझ लेने से अपने जीवन संबंधी तथा साधना संबंधी अधिक अच्छे निर्णय लेने की क्षमता हममें विकसित होती है ।

२. हमें किसका अध्ययन करना चाहिए?:- जिस पुस्तक का हम अध्ययन करते हैं, आदर्श रूप से वह हमें आगे की साधना की स्पष्ट दिशा देने वाली होनी चाहिए। पुस्तक में दिया गया मार्गदर्शन आध्यात्म के छः मूल सिद्धांतों के अनुरूप होना चाहिये।

३. आध्यात्मिक प्रगति के लिए:- जब हम आध्यात्मिक ग्रंथों का अध्ययन करते हैं, तब हमें गुरू या संत द्वारा रचित साहित्य को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसका कारण यह है कि उनमें चैतन्य होता है। उच्च आध्यात्मिक संतों द्वारा रचित साहित्य में १०० प्रतिशत चैतन्य होता है। जबकि कनिष्ठ आध्यात्मिक स्तर के लेखकों के आध्यात्मिक लेखों में कुछ प्रतिशत ही चैतन्य होता है। इस प्रकार कनिष्ठ आध्यात्मिक स्तर के लेखकों द्वारा रचित आध्यात्मिक पुस्तक के अध्ययन से हमें अधिक से अधिक बौद्धिक स्तर पर कुछ जानकारी मिल सकती है; परंतु जब हम संतों द्वारा रचित आध्यात्मिक ग्रंथ पढ़ते हैं, तब पढ़ते समय भी हमें उनसे चैतन्य मिलता है, और साधना करने का उद्देश्य भी चैतन्य की प्राप्ति करना होता है।

धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमें अपनी समझ को मात्र एक संकीर्ण सांप्रदायिक दृष्टिकोण तक सीमित नहीं रखना चाहिए। हमें अध्यात्म को अध्यात्म शास्त्र से जोड़ने का प्रयास करना चाहिए।

धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करते समय हमें ध्यान में रखना चाहिए कि इस लेखन का भावार्थ भी होता है। उसका भावार्थ समझ कर, उसे अपने जीवन में उतारना आवश्यक है। अन्यथा अनेक धार्मिक ग्रंथों को पढ़कर भी आध्यात्मिक प्रगति के संदर्भ में अल्प लाभ होता है। इसका कारण यह है कि धार्मिक ग्रंथों के भावार्थ को समझने के लिए आध्यात्मिक स्तर उच्च होना आवश्यक है। हो सकता है कि हमारा आध्यात्मिक स्तर इतना अधिक न हो कि हम ग्रंथ में दिए ज्ञान का भावार्थ समझकर उसे आचरण में उतार पाएं।

४. हमें किस प्रकार अध्ययन करना चाहिए?:- हमें अपना अध्ययन आध्यात्मिक ग्रंथों की भूमिका पढ़कर प्रारंभ करना चाहिए। इससे सारांश में लेखक अथवा संकलनकर्ता के ग्रंथ प्रस्तुत करने के उद्देश्य को समझने में सुविधा होगी और लेखक अथवा संकलनकर्ता द्वारा बताए गए आध्यात्मिक सिद्धांतों के संदर्भ को समझने में सहायता होगी।

प्रत्येक चरण में हमें स्वयं से प्रश्न पूछना चाहिए कि हमें ग्रंथ की प्रत्येक पंक्ति का अर्थ समझ में आया है या नहीं। यदि नहीं, तो हमें अपने आध्यात्मिक मार्गदर्शक अथवा हम जिस सत्संग में जाते हैं, उसके संचालक से उस सूत्र को समझ लेना चाहिए।

एक बार ग्रंथ के किसी अनुभाग का अर्थ स्पष्ट हो जाने पर, हमें अपने शब्दों में उसे किसी अन्य को बताना चाहिए। किसी सिद्धांत को अन्य को बताना तथा उसे प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना, समझने की उचित पद्धति है कि हमने उस सिद्धांत को कितने अच्छे ढंग से समझा है।

हमें यह जांचना चाहिए कि हम जो अध्ययन कर रहे हैं, उसे हमने अनुभव किया है अथवा नहीं और यदि नहीं, तो क्यों नहीं ? क्योंकि पवित्र ग्रंथ पढ़ते समय यदि हमें सत्य की अनुभूति नहीं होती है, तो इसका अर्थ है कि हमें और अधिक साधना करनी चाहिए।

जो भी हम समझ पाए हैं, उसे क्रियान्वित करने हेतु हमें विशिष्ट योजना बनानी चाहिए और समय-समय पर उस पर पुनः-पुनः ध्यान देना चाहिए कि अपेक्षित प्रगति के लक्षणों का अनुभव हमें हो रहा है अथवा नहीं ।

हमें एक ही ग्रंथ को बार-बार पढ़ना चाहिए। इसका कारण यह है कि आध्यात्मिक स्तर बढ़ने से ग्रंथ को समझने की क्षमता और उसे अपने आचरण में लाने की क्षमता भी बढ़ती जाती है ।

५. हमें कब तक अध्ययन करना चाहिए?

प्रारंभिक अवस्था के साधकों के लिए- इस अवस्था में, हमें केवल पढ़ना है, इसलिए पढ़ना चाहिए जिससे अध्यात्म तथा साधना में थोड़ा विश्वास उत्पन्न हो। इसके साथ ही हमें ग्रंथ भी वैसे पढ़ने चाहिए जिसमें शब्दार्थ और भावार्थ में कम से कम अंतर हो।

साधना आरंभ करने से अनुभूतियां होनी आरंभ हो जाती हैं, जो साधक को साधना पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। उदाहरण के लिए-- यदि हमें अगरबत्ती के न जलते हुए भी उसकी सुगंध की अनुभूति होती है, तब हमें कोई आश्चर्य नहीं होता और न ही हम इस पर अत्यधिक विचार करते हैं; क्योंकि हमने पहले ही इस विषय में पढ़ा होता है कि यह एक अनुभूति है।

६. माध्यमिक अवस्था के साधकों के लिएः- इस अवस्था में, अध्ययन आवश्यक नहीं है क्योंकि अध्यात्म में हमारा विश्वास हो गया है। यद्यपि अभी तक हमें उच्च स्तर की अनुभूति नहीं हुई है। **श्री शंकराचार्यजी ने कहा है-** शब्दों का जाल, घना जंगल है, इससे मन भटकता है और शंकाएं उत्पन्न होती हैं। इसका अर्थ यह है कि अत्यधिक अध्ययन से शंकाएं उत्पन्न हो सकती है। प्रायः हम देखते हैं कि लोग सैद्धांतिक वाद-विवाद में तथा आध्यात्मिक शब्दों के जाल में उलझे रहते हैं। उन्होंने कभी भी उच्च आध्यात्मिक स्तर के भाव की अथवा आनंद की अनुभूति नहीं ली है। इस प्रकार की समस्या का सामना करने वाले लोगों के लिए अध्यात्म के छः सिद्धांतों के अनुसार साधना पर ध्यान केंद्रित करना सर्वोत्तम है ।

७. सर्वाधिक महत्त्वपूर्णः- अध्ययन तथा साधना, यदि हमने इन दोनों को एक साथ नहीं किया तो ढेर सारा अध्ययन कर, ज्ञान प्राप्त करने से अहं बढ़ सकता है, जिससे आध्यात्मिक प्रगति के लिए संकट उत्पन्न होगा। साधना के अतिरिक्त अन्य कोई पर्याय नहीं है। इसलिए हमारा संपूर्ण अध्ययन, उच्च आध्यात्मिक स्तर की साधना को जीवन में उतारने में लगाना चाहिये।

संस्थान की ओर से विशेष सुविधा

१- आज के भौतिकवादी युग में सर्व संकट निवारण हेतु श्री नृःसिंह जी के अनुष्ठान की विशेष व्यवस्था।

२- आज के भौतिकवादी युग में (मंगल, शनि, राहु-केतु की दशा, अर्न्तदशा, अनेक आपत्तियों, कष्टों एवं कार्यों में आ रही बाधा, असाध्य रोगों के अवसर पर अभीष्ट फल प्राप्ति के लिये अचूक अनुभव सिद्ध श्री बटुक भैरव शतमष्टोत्तर पूजा/ पाठ/अनुष्ठानों की विशेष व्यवस्था।

३- यदि आप अपने दैनिक जीवन में परेशान हैं तो हमारे अनुभवों का लाभ लेकर लाभान्वित हो सकते हैं. ...**जैसेः- ग्रहदोष, देवदोष, पितृदोष, परकृत बाधा, व्यापार बृद्धि, ऋण मुक्ति, नवग्रह शान्ति आदि-आदि लौकिक समस्याओं के लिए !**

४- वीडीयो के द्वारा पूजा की विशेष व्यवस्था।

www.navgrahvatika.com

मंत्र जाप में अशुद्ध उच्चारण का प्रभाव

कई बार मानव अपने जीवन में आ रहे दुःख ओर संकटो से मुक्ति पाने के लिये किसी विशेष मन्त्र का जाप करता है, लेकिन मन्त्र का बिल्कुल शुद्ध उच्चारण करना एक आम व्यक्ति के लिये संभव नहीं है ।

कई लोग कहा करते हैं कि देवता भक्त का भाव देखते है। वो शुद्धि अशुद्धि पर ध्यान नहीं देते है।

उनका कहना भी सही है, इस संबंध में एक प्रमाण भी है...

"मूर्खो वदति विष्णाय, ज्ञानी वदति विष्णवे।
द्वयोरेव संमं पुण्यं, भावग्राही जनार्दनः।।"

भावार्थः- मूर्ख व्यक्ति **"ऊँ विष्णाय नमः"** बोलेगा। ज्ञानी व्यक्ति **"ऊँ विष्णवे नमः"** बोलेगा, फिर भी इन दोनों का पुण्य समान है। क्योंकि भगवान केवल भावों को ग्रहण करने वाले है।

जब कोइ भक्त भगवान को निष्काम भाव से, बिना किसी स्वार्थ के याद करता है, तब भगवान भक्त कि क्रिया ओर मन्त्र की शुद्धि अशुद्धि के ऊपर ध्यान नहीं देते हैं, वो केवल भक्त का भाव देखते है।

लेकिन जब कोइ व्यक्ति किसी विशेष मनोरथ को पूर्ण करने के लिये किसी मन्त्र का जाप या स्तोत्र का पाठ करता है। तब संबंधित देवता उस व्यक्ति कि छोटी से छोटी क्रिया ओर अशुद्ध उच्चारण पर ध्यान देते है। जैसा वो जाप या पाठ करता है वैसा ही उसको फल प्राप्त होता है।

जैसेः- एक बार एक व्यक्ति की पत्नी बीमार थी। वो व्यक्ति पंडित जी के पास गया ओर पत्नी की बीमारी कि समस्या बताई। पंडित जी ने उस व्यक्ति को एक मन्त्र जप करने के लिये दिया।

मन्त्रः- **"भार्या रक्षतु भैरवी"** अर्थात् हे भैरवी माँ मेरी पत्नि कि रक्षा करो।

वो व्यक्ति मन्त्र लेकर घर आ गया। और पंडित जी के बताये मुहुर्त में जाप करने बैठ गया। जब वो जाप करने लगा तो **"रक्षतु"** कि जगह **"भक्षतु"** जाप करने लगा। वो सही मन्त्र को भूल गया ।

"भार्यां भक्षतु भैरवी" अर्थात् हे भैरवी माँ मेरी पत्नी को खा जाओ। **"भक्षण"** का अर्थ खा जाना है।

अभी उसे जाप करते हुये कुछ ही समय बीता था कि बच्चों ने आकर रोते हुये बताया कि पिताजी माँ मर गई है।

उस व्यक्ति को दुःख हुआ। साथ ही पंडित जी पर क्रोध भी आया कि ये कैसा मन्त्र दिया है।

कुछ दिन बाद वो व्यक्ति पंडित जी से जाकर मिला और कहा आपके दिये हुये मन्त्र को में जप ही रहा था कि थोड़ी देर बाद मेरी पत्नी मर गई।

पंडित जी ने कहा- आप मन्त्र बोलकर बताओ..कैसे जाप किया आपने।

वो व्यक्ति बोला- "भार्यां भक्षतु भैरवी"। पंडित जी बोले- तुम्हारी पत्नी मरेगी नहीं तो और क्या होगा ? एक तो पहले ही वह मरणासन्न स्थिति में थी। और रही सही कसर तुमने **"रक्षतु"** कि जगह **"भक्षतु !"** जप करके पूरी कर दी। भक्षतु का अर्थ है! **"खा जाओ"** और दोष मुझे दे रहे हो।

उस व्यक्ति को अपनी गलती का अहसास हुआ। तथा उसने पंडित जी से क्षमा माँगी।

कहने का तात्पर्य यही है कि जब भी आप किसी मन्त्र का विशेष मनोरथ पूर्ण करने के लिये जप करें तब क्रिया ओर मन्त्र शुद्धि पर अवश्य ध्यान दें, अशुद्ध पढ़ने पर मन्त्र का अनर्थ हो जायेगा। और मन्त्र का अनर्थ होने पर आपके जीवन में भी अनर्थ होने कि संभावना बन जायेगी। अगर किसी मन्त्र का शुद्ध उच्चारण आपसे नहीं हो रहा है, तो बेहतर यही रहेगा कि आप उस मन्त्र से छेडछाड़ नहीं करें और यदि किसी विशेष मंत्र का क्या कर रहे हैं तो योग्य और समर्थ गुरु (विद्वान) के मार्गदर्शन में ही करें और मंत्र के अर्थ को अच्छी तरह से समझ लेने के बाद ही उसका प्रयोग भाव विभोर होकर करें।

अपराधियों की हस्त रेखाएं !

अपराधी उसे कहा जाता है, जो किन्हीं कारणों से मजबूर हो कर कुकृत्यों को अंजाम देते हैं। विचारणीय बिन्दू ....

१. गुरु की अंगुली
२. शनि की अंगुली
३. सूर्य की अंगुली
४. बुध की अंगुली
५. हृदय रेखा
६. मस्तिष्क रेखा
७. जीवन रेखा
८. भाग्य रेखा
६. राहू रेखा
१०. मंगल रेखा का हृदय रेखा पर अंत।

केवल एक रेखा को देखते हुए अपराध संबंधी फलादेश न करें। इसके लिए अन्य रेखाओं का विश्लेषण करना भी आवश्यक है।

जिनके दोनों हाथ का रंग लाल हो जिससे उनके स्वभाव में उग्रता होती है। इन्हें क्रोध भी बहुत जल्दी आ जाता है। धन कमाने की तरफ इनका ध्यान अधिक होता है। अतः इस प्रकार के लक्षण होने पर ऐसी स्त्रियां/पुरुष गलत साधनों का उपयोग कर बैठते हैं। हाथ का रंग लाल, हस्त प्रवृत्ति सख्त होने और अंगूठा कम खुलने पर, इनमें सहनशीलता कम होती है और साथ में जीवन रेखा सीधी होना, जो इन्हें गलत कार्य करने की ओर उकसाती है। यह इनका स्वभाव भी सख्त बना देती है। जिनके हाथ में अंगूठा कम खुलता है, यह दोषपूर्ण लक्षण है। जल्दबाजी में ये गलत कार्य कर बैठते हैं। इसलिए ये किसी पर विश्वास करके स्वयं अपने लिए कुंआ खोद देते हैं और मोटी भाग्य रेखा तो स्वयं भी उल्टापुल्टा करने के लिए तैयार रहती है।

अंगुलियों का मोटा होना भी कम बुद्धिमानी का लक्षण है। अंगुलियां जितनी मोटी होंगी, उतना ही बौद्धिक विकास कम हो जाता है। क्योंकि हाथ में अन्य दोषपूर्ण लक्षण भी होते हैं जैसे हाथ का रंग लाल, भाग्य रेखा का मस्तिष्क रेखा पर रुक जाना, अंगूठा सख्त, जिसकी वजह से ये दूसरों के लिए मरने वाले होते हैं तथा क्रोध आने पर, या मन में निश्चय होने पर ये अनुचित कार्य कर डालते हैं। फलस्वरूप इन्हें जेल की यात्रा भी करनी पड़ती है। अन्य लक्षण दोषपूर्ण होने पर, जैसे भाग्य रेखा का मोटा हो कर मस्तिष्क या हृदय रेखा पर रुक जाना और राहु रेखाओं का भाग्य रेखा को काट कर सीधे मस्तिष्क रेखा में मिल जाने पर इनमें अपराध संबंधी कार्यों की तरफ रुझान बना देते हैं। फलस्वरूप ऐसे जातक स्मैक और अन्य नशीले पदार्थ बेचने का कार्य भी करते हैं।

गुरु की अंगुली का सूर्य की अंगुली से छोटा होने और अन्य लक्षण होने पर अनैतिक कार्य करते हैं। बुध की अंगुली टेढ़ी होने पर इन्हें जेल यात्रा भी करनी पड़ती है। दोषपूर्ण भाग्य रेखा और मस्तिष्क रेखा का मंगल से निकलना इन्हें गलत कार्यों के लिए साहस दिलवाता है और राहु रेखा, इनके कार्यों का पर्दाफाश कर, इन्हें जेल तक भिजवा देती हे। सभी लक्षणों को मद्देनजर रखते हुए, सूर्य की अंगुली का झुकाव शनि की अंगुली पर होने से, इनके जीवन में बदनामी का योग भी आता है। गुरु की अंगुली भी छोटी है, इसलिए अनैतिक कार्य करने का प्रोत्साहन मिलता है ऐसी स्त्रियां एक गलती को कई बार दोहराने वाली होती हैं, क्योंकि भाग्य रेखा इनके हाथों में मस्तिष्क और हृदय रेखा पर रुक रही होती है। अन्य लक्षण दोषपूर्ण और मस्तिष्क रेखा का मंगल से निकलने के कारण ये अंजाम की परवाह न करने वाली और प्रपंच करने वाली होते हैं। अतः इस प्रकार के लक्षणों के सामने आने पर ऐसी स्त्रियों और पुरुषों से बच कर रहना चाहिए। ये खुद तो फंसती ही हैं तथा दूसरों को भी फंसा देती हैं। हाथ में अन्य क्रूर लक्षण होने पर ये हत्या तक कर डालती हैं।

नवग्रह वाटिका के प्रॉगढ़ में आपनी समस्त समस्याओं की पूजा का लाभ अब आप वीडियो के द्वारा करके लाभ प्राप्त कर सकते हैं! 09760689730......08445289000

दुर्भाग्य से मुक्ति पाने के लिए

"पूजा" ईश्वर के प्रति अपनी आस्था को प्रदर्शित करने का एक पारंपरिक तरीका है। आप मंदिर, घर, ऑफिस या अन्य किसी भी स्थान पर गायन, प्रार्थना के जरिए पूजा कर सकते हैं। पूजा करने से आपको बहुत से लाभ प्राप्त होते हैं, जैसे कि ये आपके जीवन में सकारात्मकता का प्रसार करती है और साथ ही अगर पूरे विधि-विधान के साथ पूजा-अर्चना की जाए तो ये आपको पाप कर्मों से भी मुक्त करती है। हिन्दू धर्म में ऐसे बहुत से तरीके हैं जिनके अनुसार आप ईश्वर की पूजा कर सकते हैं, जैसे जप, यज्ञ और हवन।

सनातन मान्यता के अनुसार जो व्यक्ति पूरी श्रद्धा और तन्मयता के साथ भगवान की पूजा करता है उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, उसे कभी खाली हाथ नहीं रहना पड़ता। सर्वोच्च शक्ति स्वयं उसे सही मार्ग पर चलने को प्रेरित करती है। इसलिए अगर आप भगवान की पूजा करते समय पूरी श्रद्धा भाव रखते हैं तो आपके सभी सपने पूरे होते हैं, आप जिस चीज की इच्छा रखते हैं, वह आपको अवश्य मिलती है।

इन सभी के अलावा अन्य भी बहुत से कारण हैं जिनके आधार पर पूजा करने का विधान है। **जैसें:-** सर्व संकट निवारणार्थ, ग्रहदोष, देवदोष, पितृदोष, कालसर्प दोष, परकृत बाधा, व्यापार वृद्धि, धन-सम्पदा प्राप्ति, ऋणमुक्ति, नवग्रह शान्ति, रूद्राभिषेक आदि, लौकिक एवं भौतिक समस्याओं आदि जैसे कारण शामिल हैं। ऐसी बहुत सी पूजाएं हैं जिन्हें किसी ना किसी विशिष्ट दिन पर करने का विधान है, तभी आपकी मनोकामना पूर्ण भी होती है। वैदिक धर्म में पूजा करना या करवाना, दोनों ही बहुत जटिल कर्मकांडों में शामिल है, क्योंकि इसमें मंत्रों के सही उच्चारण के साथ-साथ विधि का भी पूरा रखा जाता है।

जब कोई भक्त पूजा करवाने का संकल्प लेता है तो उसे यह बताया जाता है कि आप किसी ना किसी विशेषज्ञ की सहायता अवश्य लें, तभी आपको उस पूजा का संपूर्ण फल प्राप्त होगा।

पूजा का ज्यादा से ज्यादा लाभ प्राप्त करने के लिए यह अति आवश्यक है कि या तो आप पूरे वैदिक तरीके से संपन्न करें या फिर किसी अच्छे ज्योतिषी (विद्वान) की सलाह लें।

वर्तमान काल में विश्व में प्रथमवार स्थापित (वेद, पुराण, संहिता आदियों पर आधारित, ज्योतिष शोधशाला) श्री लक्ष्मी नृःसिंह नवग्रह वाटिका, लोकमणी विहार, राधाकुण्ड परिक्रमा मार्ग, गोवर्धन के प्रॉगढ़ में आपके लिए बहुत सी ऑनलाइन पूजा उपलब्ध हैं, जो आप किसी भी शुभ दिन पर करवा सकते हैं।

पूजा करवाने की कीमत दिन के हिसाब से अलग-अलग है। हम आपकी ओर से कर्मकांड विशेषज्ञों द्वारा (निजी अनुभवों पर) यह पूजा करवाते हैं, जो पूरे विधि-विधान के साथ की जाती है।

यदि आप भी किसी समस्या से पीड़ित हैं और पूजा करवाना चाहते हैं तो **हमारी साइट:- www.navgrahvatika.com** पर आपको संबंधित जानकारी अवश्य मिल जाएगी।

सम्पर्क सूत्र- **9760689730 ------ 8445289000 ----- 7417071048**

विशेष:- आप इस स्थल पर वीडियों के द्वारा पूजा कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

हमारे यहाँ हस्त लिखित जन्म-पत्र फलादेश सहित तैयार किये जाते हैं। पं० आकाश मिश्रा
08445289000
Web- www.navgrahvatika.com

श्री नरसिंह जय जय नरसिंह

श्री नृःसिंह रमल ज्योतिष शोध संस्थान

मंदिर श्री नृःसिंह भगवान, चकलेश्वर रोड, गोवर्धन द्वारा

पराविज्ञान की सहायता से रमल ज्योतिष पर निजी शोध की जनकल्याणार्थ प्रस्तुति.

......विश्व में प्रथमबार स्थापित......

'श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड'

(असाध्य बीमारियों को नष्ट करने वाला जल, के बाद अब जनकल्याणार्थ उपयोग हेतु)

श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड के जल एवं वेदोक्त नवग्रह वाटिका की समिधाओं से मिश्रित

श्री गिरिराज ज्योति

नवग्रह चंदन

(नवग्रहों के शान्तार्थ)

वेदोक्त नवग्रह वाटिका में प्राण-प्रतिष्ठित दक्षिणावर्ती शंख !

श्री नरसिंह जय जय नरसिंह श्री नृःसिंह कवच से सम्पुट एवं श्री नवग्रह यंत्र सहित ऋण मुक्ति यंत्र

श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड के जल से अभिमंत्रित, श्री नृःसिंह कवच एवं श्री नवग्रह मंत्रों से वेदोक्त नवग्रह वाटिका में प्राण-प्रतिष्ठित !

श्री नृःसिंह नवग्रह कवच

नवग्रह लाकेट

सर्व संकट निवारणार्थ, ग्रहदोष, देवदोष, पितृदोष, परकृत बाधा, व्यापार वृद्धि, ऋणमुक्ति, नवग्रह शान्ति आदि-आदि लौकिक एवं भौतिक समस्याओं के लिए!

सभी राशियों के प्राण-प्रतिष्ठित रत्न-उपरत्न

प्राप्ति स्थान **श्री लक्ष्मी नृःसिंह नवग्रह वाटिका**

ykdef.k fogkj] jk/kkd.M ifjØek ekx] xko/ku ¼eFkjk½

Ph- 09760689730
08445289000

Email: navgrahvatika@gmail.com
Web- www.navgrahvatika.com

श्री गिरिराज महाराज की जय

रमल ज्योतिष द्वारा

भूत, भविष्य वर्तमान सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर एवं समस्त समस्याओं का समाधान

केवल फोन पर

समय दोपहर 12:00 से शायं 05:00 तक

Mob.- 09412226020 / 09760689730

शाखा-कार्यालय

श्री गिरिराज ज्योति पत्रिका

अशोक कैसिट सैंटर

१८३-१८४, प्रथम तल,

विकास बाजार, मथुरा।

अशोक कुमार गुप्ता (सहसंपादक)

Mob.- 09412281034

श्री नृःसिंह स्तुति

हे नृःसिंह हम तो बने तुम्हारे।
अब मर्जी रही तुम्हारी बनो न बनो हमारे।। हे नृःसिंह।।
जाँति–पाँति, कुल, धर्म, धन सब कुछ तुम पर वारे।
जैसा चाहो नाच नचा लो, हर प्रकार हैं तुम्हारे।। हे नृःसिंह।।
सुनते थे गज, गीध, अजामिल, प्रह्लाद भक्त उवारे।
पर ना जाने मेरे कारण क्यूँ बन्द कर लिये दरबाजे।। हे नृःसिंह।।
छोड़ गये सब स्वारथ साथी अपनी राह सिधारे।
दीन–अधीन, मलीन–हीन के अब हो तुम्हीं सहारे।। हे नृःसिंह।।
पूर्व कर्म कृत कुटिलं प्रकृति वश छोड़े साधन सारे।
चढ़ा रहे हैं चरणों में अश्रु बूंद फुहारे।। हे नृःसिंह।।
हे नृःसिंह हम तो बने तुम्हारे।
अब मर्जी रही तुम्हारी बनो न बनो हमारे।। हे नृःसिंह।।
श्री नृःसिंह शरणं मम्!

RNI NO- UPHIN-1999/975 PRINTED BOOK- 121/1

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक :- पं. कैलाश चन्द्र मिश्रा संपादक श्री नृःसिंह रमल ज्योतिष शोध संस्थान, श्री नृःसिंह मंदिर चकलेश्वर रोड, गोवर्धन-२८१५०२ (मथुरा) उ.प्र. के लिए आर. के. प्रिंटर्स, १६ डी, गोविन्द नगर मथुरा द्वारा मुद्रित।